काव्यभाषा में यह विशेषता उनके शब्द-चयन से आई है। उन्होंने तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशी सभी प्रकार के शब्दों का प्रयोग किया है। उनके अधिकांश तत्सम शब्द भी वे हैं जो प्रचलित हैं और हिन्दी में अपना लिए गए हैं। लेकिन वे प्रचलित शब्दों का भी ऐसी ठीक जगह प्रयोग करते हैं कि शब्द अपने अर्थ को बहुत ही तीखेपन से उजागर करता है।

तत्सम और तद्भव शब्दों के साथ ही उन्होंने ग्राम्य तथा प्रांतीय शब्दों का प्रयोग भी किया है। इस तरह के शब्दों ने उनकी भाषा को एक नयी शक्ति और ताजगी दी है। साथ ही इनसे कविताओं में लोकभाषा की लय और सीधापन आ गया है।

मिश्र जी ने अधिकतर छोटी-छोटी कविताएं लिखी हैं। छोटे से छंद की दो-दो पंक्तियों के बाद वे तुक बदल देते हैं। इससे भाषा में लय और गति आ गई है। इन्हीं छोटे छंदों में वे छोटी से छोटी वस्तु और बड़ी से बड़ी बात का भी बहुत सुन्दर और लयात्मक वर्णन करते हैं।

मिश्र जी की काव्य भाषा में विंबात्मक और प्रतीकात्मक क्षमता भी है। उनके बिंब और प्रतीक भी बहुत स्पष्ट और सहज हैं। उनमें कहीं भी जटिलता या बोझिलता नहीं मिलती। लाक्षणिक-आलंकारिक तत्सम काव्य शैली को उन्होंने प्रायः कहीं नहीं अपनाया है। वस्तुतः वे ठीक उसी प्रकार लिखते हैं जिस प्रकार हम रोजमर्रा के जीवन में बोलते हैं। अभिव्यक्ति की [illegible], आत्मीयता और कलात्मकता उनकी काव्यशैली की [illegible]र्ण विशेषताएं हैं। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि अनुभूति और

Scanned with CamScanner

भवानी प्रसाद मिश्र की भाषा शैली

भवानीप्रसाद मिश्र की **भाषा शैली** अत्यन्त सहज और बोलचाल की भाषा के निकट है। 'दूसरा सप्तक' के वक्तव्य में उन्होंने अपनी भाषा शैली के विषय में लिखा है कि, "वर्ड्सवर्थ की एक बात मुझे बहुत पटी कि 'कविता की भाषा यथासंभव बोलचाल के करीब हो।'..... तो मैंने जाने-अनजाने कविता की भाषा सहज रखी.....। बहुत मामूली रोजमर्रा के सुख-दुख मैंने इनमें कहे हैं जिनका एक शब्द भी किसी को समझाना नहीं पड़ता।"

मिश्र जी की इस सहज सरल भाषा की सपाटबयानी में भी अद्भुत सौंदर्य है। इसका कारण यह है कि उनके अनुभवों में मौलिकता और ईमानदारी है अतः उनकी सीधी सपाट भाषा में भी आकर्षण और ताजगी आ गई है। हिन्दी काव्य-भाषा को मिश्र जी की सबसे बड़ी देन यह है कि उन्होंने बोलचाल की भाषा को साहित्यिक भाषा और काव्यभाषा का दर्जा प्रदान किया। उनकी कविताओं को पढ़ते समय ऐसा लगता है जैसे कोई मित्र हमसे बातचीत कर रहा हो अर्थात् कवि और पाठक के बीच कोई औपचारिकता या दूरी नहीं लगती है।

Scanned with CamScanner